

संस्कृत शिक्षण का महत्व

(1) संस्कृत शिक्षण का सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्व.

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह भारत के विभिन्न प्रदेशों की भाषा आदि की विभिन्नताओं को लांघकर इनको एक सूत्र में बाँधती है। संस्कृत के अध्ययन से हम अपनी संस्कृति से अवगत हो सकते हैं। इस दृष्टि से संस्कृत शिक्षण महत्वपूर्ण है।

(2) संस्कृत शिक्षण का साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्व

संस्कृत साहित्य लक्षण तथा लक्ष्य ग्रंथों की निधि है। संस्कृत भाषा के साहित्य की विचारधारा एवं भाषा की दृष्टि से आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य पर प्रभाव दृष्टिकोण से होता है। संस्कृत भाषा के साहित्य के अध्ययन से विद्यार्थी साहित्यिक रसास्वादन कर सकते हैं।

(3) संस्कृत शिक्षण का भावात्मक एवं नैतिक दृष्टिकोण से महत्व

संस्कृत शिक्षण से छात्रों का भावात्मक एवं नैतिक विकास होता है। छात्र सदाचारी बनते हैं। अतः संस्कृत शिक्षण का भावात्मक एवं नैतिक महत्व भी है।

(4) संस्कृत शिक्षण का व्यवसायिक दृष्टिकोण से महत्व

आज के युग में विद्या की प्रधानता है। आयुर्वेद, संगीत, मूर्तिकला, ज्योतिष, शिक्षण आदि विषयों के ज्ञान के लिए संस्कृत भाषा के शिक्षण का महत्व है।

(5) संस्कृत शिक्षण का कलात्मक दृष्टिकोण से महत्व

प्राचीन काल में भारत ने स्थापत्य, मूर्ति, नृत्य, संगीत आदि कलाओं में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। अतः इन कलाओं के ज्ञान के लिए भी संस्कृत शिक्षण का महत्व है।

संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य

प्रारंभिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य

- (1) विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए सरल गद्यांशों का शुद्ध एवं स्पष्ट वाचन करने का कौशल विकसित करना।
- (2) सरल श्लोकों का आरोह अवरोह के साथ शुद्ध एवं स्पष्ट पाठ करने का कौशल विकसित करना।
- (3) भाषा तत्वों जैसे धातुरूप, शब्द रूप, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, एवं सूक्तियों के प्रयोग सीखना।
- (4) सरल विषयों आदि पर अनुच्छेद लिखने की क्षमता का विकास करना।
- (5) पत्र लेखन की क्षमता का विकास करना।
- (6) नैतिक गुणों का विकास करना।
- (7) संस्कृत के सरल गद्यांशों एवं श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद करने की क्षमता का विकास करना।
- (8) सरल हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करने की क्षमता प्रदान करना।

माध्यमिक स्तर पर शिक्षण के स्तर पर संस्कृत का महत्व

- (1) संस्कृत के सरल एवं कठिन गद्यांशों के विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए शुद्ध एवं स्पष्ट वाचन करने का कौशल विकसित करना।
- (2) वाच्य परिवर्तन के नियम से अवगत कराना।
- (3) कथा लेखन एवं संवाद लेखन की क्षमता प्रदान करना।
- (4) संस्कृत, सूक्तियों एवं श्लोकों का अवसर के अनुसार अनुकूल प्रयोग करने की क्षमता प्रदान करना।

प्र० . संस्कृत शिक्षण करते समय शिक्षण अधिगम सामग्री का क्या महत्व है ? कौन-कौन सी शिक्षण अधिगम सामग्री शिक्षण कार्य करते समय प्रयोग की जा सकती है ? विस्तार से समझाइए ।

‘शिक्षण अधिगम सामग्री’ वे साधन हैं, जिनका प्रयोग शिक्षक कक्षा शिक्षण को रोचक, उपयोगी, प्रभावी बनाने के लिए करता है । ये शिक्षक के लिए शिक्षण सहायक साधन हैं ।

इन्हें श्रव्य - दृश्य सहायक साधन भी कहते हैं ।

संस्कृत शिक्षण में शिक्षण अधिगम सामग्री का महत्व निम्नलिखित कारणों से है -

- (1) शिक्षण अधिगम सामग्री सम्प्रेषण का नया माध्यम है
- (2) ये छात्रों का ध्यान केन्द्रित करने में सहायक है ।
- (3) ये उन्हें जानकारी प्रदान करने में सहायता करती हैं ।
- (4) यह छात्रों में रुचि उत्पन्न करने में सहायक करती हैं ।
- (5) यह अभ्यास तथा प्रभावी प्रस्तुति में सहायता करते हैं ।
- (6) ये छात्रों की श्रवण और दृश्य इन्द्रियों को आकर्षित करते हैं ।
- (7) ये शिक्षण में विविधता लाते हैं ।
- (8) यह छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करते हैं ।
- (9) यह छात्रों को जिज्ञासु बनाते हैं ।

संस्कृत शिक्षण में तीन प्रकार की शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग किया जाता है -

(1) श्रव्य सामग्री का उपयोग

ग्रामोफोन . इसमें द्वात्र शिक्षण के लिए उसको अपनी भाषा में कहकर रिकार्ड कर लेते हैं, बाद में यह उनकी भाव-शक्तानुसार सहायता करता है।

रेडियो . रेडियो अधिगमन का एक प्रमुख साधन है। रेडियो में विभिन्न कार्यक्रम प्रसारित होते हैं, जो उनकी शिक्षण के दौरान काफी सहायता करते हैं।

टेपरिकॉर्डर . इसमें अपनी आवाज को रिकार्डिंग करके दीर्घकाल तक रखा जा सकता है. और अनुपयोगी सामग्री या रिकार्डिंग को मिटाया जा सकता है।

भाषामन्त्र - भाषामन्त्र या लिंगाफोन में एक ही बात को एक साथ बैठकर अनेक व्यक्ति सुन सकते हैं। शुद्ध रूप से उच्चारित ध्वनियों तथा शब्दों को छात्रों को सिखा सकते हैं।

(2) संस्कृत शिक्षण में दृश्य साधनों / सामग्री का प्रयोग

(i) श्यामपट्ट . इसका उपयोग कक्षा में अधिगमन के दौरान किया जाता है। इस पर सफेद चौक से लिखने से अक्षर स्पष्ट दिखाई देते हैं। शिक्षक का मित्र भी श्यामपट्ट को कहा जाता है।

(ii) वास्तविक वस्तु . कुछ वस्तुओं को आसानी से कक्षा में लाया जा सकता है। वास्तविक वस्तु को प्रत्यक्ष देखकर छात्र विषयवस्तु को अच्छी प्रकार से समझते हैं।

- (iii) चित्र - चित्र वास्तविक वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिक्षक किसी वस्तु को छात्रों को दिखाने के लिए उसकी आकृति दिया सकता है, जिससे कि उसका अर्थ स्पष्ट हो जाएगा।
- (iv) रेखाचित्र - किसी वस्तु, व्यक्ति, पक्षी आदि की आकृति केवल रेखाओं द्वारा खींच देने को रेखाचित्र कहते हैं। वस्तु या चित्र के अभाव में कभी-कभी रेखाचित्र का प्रयोग भी शिक्षक कर सकता है।
- (v) मानचित्र - संस्कृत में ऐतिहासिक स्थलों, धार्मिक नगरों तथा नदियों को और पर्वतों को विभिन्न मानचित्रों में दिखाया जा सकता है।
- (vi) प्रतिरूप - प्रतिरूप का उपयोग चित्रों की अपेक्षा अधिक प्रभावी होता है, क्योंकि ये प्रभावीता के अधिक निकट होते हैं।
- (vii) चार्ट - शिक्षण के दौरान मौखिक कार्य, शब्दार्थ, नियम, उदाहरण और रचना की रूपरेखा के लिए चार्ट का उपयोग कर अपने शिक्षण को रोचक एवं उपयोगी बना सकते हैं।
- (viii) स्लाइड्स - स्लाइड्स एक प्रकार के लघु चित्र होते हैं, जिनको स्लाइड प्रोजेक्टर की सहायता से बड़े आकार में दिखाया जा सकता है।
- (ix) फ्लैश कार्ड - फ्लैश कार्ड, कार्ड के युग्म (Set) होते हैं, जिनकी एक ओर शब्द या वाक्यांश और दूसरी ओर उनका अर्थ अंकित होते हैं।